International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

दुर्ग जिले के शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों में आत्म-अभिव्यक्ति का तुलनात्मक अध्ययन

गीतू साहू[1], डॉ. (श्रीमती) मंजूषा नामदेव[2]

[1]शोधार्थी, [2]शोध निर्देशक, सहायक प्राध्यापिका (शिक्षा)
[1,2]स्वामी श्रीस्वरूपानंद सरस्वती महाविद्यालय, आमदी नगर, हूडको, भिलाई, दुर्ग (छत्तीसगढ़)

सार
प्रस्तुत शोध-पत्र का उद्देश्य दुर्ग जिले के शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों में आत्म-अभिव्यक्ति के स्तर का तुलनात्मक अध्ययन करना है। आत्म-अभिव्यक्ति विद्यार्थियों के भावनात्मक, सामाजिक तथा शैक्षणिक विकास का एक महत्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक पक्ष है, जो उनके विचारों, भावनाओं एवं अनुभवों को अभिव्यक्त करने की क्षमता को दर्शाता है। अध्ययन हेतु दुर्ग जिले के 200 विद्यार्थियों (100 शासकीय एवं 100 अशासकीय विद्यालयों से) को न्यादर्श के रूप में चयनित किया गया। आत्म-अभिव्यक्ति मापनी (आर. पी. वर्मा एवं यू. मिश्रा, 2011) का प्रयोग किया गया। आंकड़ों के विश्लेषण हेतु माध्य, मानक विचलन एवं t-परीक्षण का प्रयोग किया गया। अध्ययन से यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की आत्म-अभिव्यक्ति का स्तर शासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की अपेक्षा अधिक पाया गया। निष्कर्षों से यह ज्ञात हुआ कि शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की आत्म-अभिव्यक्ति के स्तर में सार्थक अंतर विद्यमान है।

मुख्य शब्द: आत्म-अभिव्यक्ति, मनोवैज्ञानिक पक्ष, शैक्षणिक विकास एवं शैक्षिक सफलता

प्रस्तावना
आत्म-अभिव्यक्ति मानव व्यक्तित्व का एक मौलिक एवं आवश्यक गुण है, जिसके माध्यम से व्यक्ति अपने विचारों, भावनाओं, अनुभवों एवं दृष्टिकोणों को सामाजिक रूप से स्वीकार्य ढंग से व्यक्त करता है। शैक्षणिक परिवेश में आत्म-अभिव्यक्ति का विशेष महत्व है, क्योंकि यह विद्यार्थियों की संप्रेषण क्षमता, आत्म-विश्वास, भावनात्मक संतुलन एवं सामाजिक समायोजन को प्रभावित करती है। उच्चतर माध्यमिक स्तर वह अवस्था है जहाँ विद्यार्थियों का व्यक्तित्व तीव्र गति से विकसित होता है तथा वे आत्म-पहचान एवं आत्म-स्वीकृति की दिशा में अग्रसर होते हैं। इस स्तर पर आत्म-अभिव्यक्ति का विकास न केवल शैक्षणिक सफलता में सहायक होता है, बल्कि भावी जीवन में भी सकारात्मक भूमिका निभाता है।

शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों का शैक्षणिक वातावरण, शिक्षण पद्धतियाँ, संसाधन उपलब्धता तथा शिक्षक-विद्यार्थी अंतःक्रिया में भिन्नता पाई जाती है, जो विद्यार्थियों की आत्म-अभिव्यक्ति को प्रभावित कर सकती है। शासकीय विद्यालयों में प्रायः संसाधनों की सीमाएँ होती हैं, जबकि अशासकीय विद्यालय अपेक्षाकृत अधिक संरचित एवं प्रतिस्पर्धात्मक वातावरण प्रदान करते हैं। ऐसे में यह अध्ययन आवश्यक हो जाता है कि इन दोनों प्रकार के विद्यालयों के विद्यार्थियों की आत्म-अभिव्यक्ति में किस प्रकार का अंतर पाया जाता है। प्रस्तुत शोध इसी संदर्भ में आत्म-अभिव्यक्ति के तुलनात्मक अध्ययन का प्रयास है।

संबंधित शोध-अध्ययन
पूर्ववर्ती शोधों से यह स्पष्ट होता है कि आत्म-अभिव्यक्ति का संबंध भावनात्मक बुद्धिमत्ता, शैक्षणिक उपलब्धि, सामाजिक समायोजन एवं आत्म-सम्मान से है। शर्मा एवं वर्मा (2024) ने पाया कि सहायक कक्षा-परिवेश आत्म-

अभिव्यक्ति को प्रोत्साहित करता है। मोहनप्रिया (2024) ने उच्चतर माध्यमिक विद्यार्थियों में मुखरता एवं आत्म-अभिव्यक्ति के मध्य सकारात्मक संबंध पाया। दास एवं चटर्जी (2024) के अध्ययन में भावनात्मक बुद्धिमत्ता और आत्म-अभिव्यक्ति के बीच सार्थक सहसंबंध पाया गया। विदेशी अध्ययनों में डू एवं सहयोगियों (2024) ने डिजिटल माध्यमों के माध्यम से आत्म-अभिव्यक्ति के सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों प्रभावों को रेखांकित किया। इन अध्ययनों से यह स्पष्ट है कि विद्यालय का प्रकार आत्म-अभिव्यक्ति को प्रभावित कर सकता है, परंतु दुर्ग जिले के संदर्भ में तुलनात्मक अध्ययन की कमी रही है, जिसे प्रस्तुत शोध द्वारा पूर्ण करने का प्रयास किया गया है।

शोध-उद्देश्य

1. दुर्ग जिले के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की आत्म-अभिव्यक्ति के स्तर का अध्ययन करना।
2. दुर्ग जिले के शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की आत्म-अभिव्यक्ति में अंतर का अध्ययन करना।
3. विद्यालय प्रकार (शासकीय एवं अशासकीय) के संदर्भ में आत्म-अभिव्यक्ति के माध्यांकों की तुलना करना।

शून्य-परिकल्पना

H_{01} : दुर्ग जिले के शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की आत्म-अभिव्यक्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

शोध-विधि

प्रस्तुत अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया। अध्ययन का स्वरूप वर्णनात्मक एवं तुलनात्मक है।

जनसंख्या एवं न्यादर्श

अध्ययन की जनसंख्या दुर्ग जिले के शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थी हैं। इनमें से साधारण यादृच्छिक विधि द्वारा कुल 200 विद्यार्थियों का चयन किया गया, जिनमें 100 शासकीय एवं 100 अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थी सम्मिलित हैं।

उपकरण

आत्म-अभिव्यक्ति मापनी (आर. पी. वर्मा एवं यू. मिश्रा, 2011) का प्रयोग किया गया।

सांख्यिकीय विश्लेषण

अध्ययन में माध्य, मानक विचलन एवं स्वतंत्र t-परीक्षण का प्रयोग किया गया।

तालिका क्रमांक : 1

दुर्ग जिले के शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की आत्म-अभिव्यक्ति के माध्य, मानक विचलन एवं t-मान का तुलनात्मक विश्लेषण

विद्यालय प्रकार	N	माध्य	मानक विचलन	t-मान
शासकीय	100	72.45	8.12	3.21
अशासकीय	100	76.30	7.85	

*0.05 स्तर पर सार्थक

व्याख्या

तालिका क्रमांक 1 में दुर्ग जिले के शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की आत्म-अभिव्यक्ति के माध्य, मानक विचलन एवं t-मान का तुलनात्मक विवरण प्रस्तुत किया गया है। तालिका से स्पष्ट होता है कि शासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की आत्म-अभिव्यक्ति का माध्यांक 72.45 तथा मानक विचलन 8.12 पाया गया, जबकि अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों का माध्यांक 76.30 एवं मानक विचलन 7.85 रहा। अतः यह निष्कर्ष

प्राप्त होता है कि अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की आत्म-अभिव्यक्ति का औसत स्तर शासकीय विद्यालयों की अपेक्षा अधिक है तथा उनके अंकों का प्रसरण अपेक्षाकृत कम है।

दोनों समूहों के माध्यांकों के मध्य अंतर की सांख्यिकीय सार्थकता की जाँच हेतु स्वतंत्र t-परीक्षण का प्रयोग किया गया, जिसमें t-मान 3.21 प्राप्त हुआ। यह मान 0.05 स्तर पर सार्थक पाया गया। अतः यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की आत्म-अभिव्यक्ति में पाया गया अंतर संयोगवश नहीं है, बल्कि वास्तविक एवं अर्थपूर्ण है। परिणामस्वरूप, प्रस्तुत अध्ययन में निर्धारित शून्य-परिकल्पना—कि "**दुर्ग जिले के शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की आत्म-अभिव्यक्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है" अस्वीकृत की जाती है।** इस प्रकार यह सिद्ध होता है कि विद्यालय का प्रकार विद्यार्थियों की आत्म-अभिव्यक्ति को प्रभावित करने वाला एक महत्वपूर्ण कारक है।

निष्कर्ष

अध्ययन से यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की आत्म-अभिव्यक्ति का स्तर शासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की अपेक्षा अधिक पाया गया। दोनों समूहों के माध्यांकों में सांख्यिकीय रूप से सार्थक अंतर विद्यमान है।

शैक्षिक उपयोगिता

1. प्रस्तुत अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि विद्यालय का प्रकार विद्यार्थियों की आत्म-अभिव्यक्ति को प्रभावित करता है। यह जानकारी शिक्षकों को कक्षा-कक्ष में ऐसी शिक्षण रणनीतियाँ अपनाने हेतु प्रेरित करती है, जो विद्यार्थियों को अपने विचारों एवं भावनाओं को स्वतंत्र रूप से व्यक्त करने के अवसर प्रदान करें।
2. अध्ययन के निष्कर्ष शासकीय विद्यालयों में आत्म-अभिव्यक्ति को प्रोत्साहित करने हेतु विशेष कार्यक्रमों, गतिविधि-आधारित शिक्षण एवं सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों के आयोजन की आवश्यकता को रेखांकित करते हैं, जिससे विद्यार्थियों के संप्रेषण कौशल एवं आत्म-विश्वास का विकास हो सके।
3. यह शोध शिक्षकों को विद्यार्थी-केन्द्रित शिक्षण पद्धतियाँ अपनाने की दिशा में मार्गदर्शन प्रदान करता है, जिससे कक्षा-कक्ष का वातावरण अधिक सहयोगात्मक, संवादपरक एवं अभिव्यक्तिपूर्ण बनाया जा सके।
4. विद्यालय प्रशासन के लिए यह अध्ययन उपयोगी सिद्ध होता है, क्योंकि इसके माध्यम से वे पाठ्यक्रम के साथ-साथ व्यक्तित्व विकास से संबंधित कार्यक्रमों को प्रभावी ढंग से समाहित कर सकते हैं, जो विद्यार्थियों की आत्म-अभिव्यक्ति को सुदृढ़ बनाते हैं।
5. अध्ययन के निष्कर्ष शैक्षिक योजनाकारों एवं नीति-निर्माताओं को इस दिशा में सचेत करते हैं कि विद्यालयों में केवल शैक्षणिक उपलब्धि ही नहीं, बल्कि विद्यार्थियों की अभिव्यक्तिपूर्ण क्षमताओं के विकास को भी समान महत्व दिया जाना चाहिए।
6. यह शोध भविष्य के अनुसंधानकर्ताओं के लिए आधार प्रदान करता है, जिसके माध्यम से आत्म-अभिव्यक्ति के अन्य आयामों—जैसे लिंग, सामाजिक-आर्थिक स्तर एवं अधिगम शैलियों—के संदर्भ में आगे गहन अध्ययन किया जा सकता है।

सुझाव

1. कक्षा-कक्ष में नियमित रूप से कक्षा-चर्चा एवं समूह-कार्य को बढ़ावा दिया जाना चाहिए, ताकि विद्यार्थियों को अपने विचारों एवं भावनाओं को स्वतंत्र रूप से व्यक्त करने का अवसर प्राप्त हो सके।
2. विद्यार्थियों को विभिन्न शैक्षणिक एवं सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों के माध्यम से अपने विचार व्यक्त करने के पर्याप्त अवसर प्रदान किए जाने चाहिए, जिससे उनकी आत्म-अभिव्यक्ति एवं आत्म-विश्वास में वृद्धि हो।
3. शासकीय विद्यालयों में शैक्षणिक संसाधनों, सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों एवं अभिव्यक्तिपूर्ण कार्यक्रमों की संख्या बढ़ाई जानी चाहिए, ताकि विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास को प्रोत्साहन मिल सके।

4. शिक्षकों को ऐसी शिक्षण पद्धतियाँ अपनानी चाहिए जो विद्यार्थी-केन्द्रित हों तथा कक्षा-कक्ष के वातावरण को संवादपरक, सहयोगात्मक एवं अभिव्यक्तिपूर्ण बनाएँ।
5. विद्यालय प्रशासन द्वारा वाद-विवाद, नाट्य-प्रस्तुति, भाषण एवं रचनात्मक लेखन जैसी गतिविधियों का नियमित आयोजन किया जाना चाहिए, जिससे विद्यार्थियों की आत्म-अभिव्यक्ति के विविध आयाम विकसित हो सकें।
6. अभिभावकों को भी विद्यार्थियों के विचारों को महत्व देते हुए घर के वातावरण में संवाद को प्रोत्साहित करना चाहिए, जिससे आत्म-अभिव्यक्ति का विकास विद्यालय के बाहर भी सुदृढ़ हो सके।
7. शैक्षिक योजनाकारों एवं नीति-निर्माताओं द्वारा विद्यालयी पाठ्यक्रम में आत्म-अभिव्यक्ति से संबंधित गतिविधियों एवं कार्यक्रमों को समुचित स्थान दिया जाना चाहिए, जिससे शिक्षा व्यवस्था अधिक मानव-केन्द्रित एवं प्रभावी बन सके।

संदर्भ-ग्रंथ

1. वर्मा, आर.पी., एवं मिश्रा, यू. (2019) आत्म-अभिव्यक्ति मापनी. आगरा: मनोवैज्ञानिक प्रकाशन
2. शर्मा, आर., एवं वर्मा, एस. (2024) भारत के महाविद्यालय उच्च विद्यालय के छात्रों में कक्षा-कक्षा परिवेश एवं आत्म-अभिव्यक्ति का अध्ययन, *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशनल साइकोलॉजी*, 9(2), 45-58
3. मोहनप्रिया, एस. (2024) तमिल के कॉलेज कॉलेज के छात्रों में आत्म-अभिव्यक्ति के घटक के रूप में मठ का अध्ययन, *इंडियन जर्नल ऑफ साइकोलॉजिकल स्टडीज*, 11(1), 62-74
4. दास, पी., एवं चटर्जी, एम. (2024) पश्चिम बंगाल के कैथोलिक ऑर्केस्ट्रा के छात्रों में साइंटिस्ट वास्तुशिल्प एवं आत्म-अभिव्यक्ति का अध्ययन, *जर्नल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च एंड रिसर्च*, 8(3), 101-113
5. पटेल, के.आर. (2024) गुजरात के महाविद्यालय उच्च विद्यालय के छात्रों में कला-आधारित असोसिएशन के माध्यम से आत्म-अभिव्यक्ति को प्रेरित किया जाता है, *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ आर्ट्स एंड एजुकेशन*, 6(2), 29-41
6. डू, जे., ली, वाई., और झांग, एच. (2024) चीन के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों में सोशल मीडिया का उपयोग, आत्म-अभिव्यक्ति एवं विद्यालयी जुड़ाव का अध्ययन, *फ्रंटियर्स इन साइकोलॉजी*, 15, 1-12। https://doi.org/10.3389/fpsyg.2024
7. विलियम्स, टी., और कार्टर, एल. (2024) उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अभिव्यक्तिपूर्ण कक्षा-प्राथमिकताएँ एवं विद्यार्थी, *जर्नल ऑफ एजुकेशनल प्रैक्टिस*, 19(4), 210-224।
8. सिंह, ए., एवं कौर, जे. (2025) पंजाब के कैथोलिक कॉलेज के छात्रों में अभिभावक प्रोत्साहन एवं आत्म-अभिव्यक्ति का अध्ययन, *इंडियन जर्नल ऑफ सोशल एंड एजुकेशनल स्टडीज*, 12(1), 88-102।
9. राव, एस. (2025) तेलांगना के कॉलेज माध्यमिक विद्यालय के छात्रों में सोशल मीडिया आधारित आत्म-अभिव्यक्ति एवं पहचान विकास, *जर्नल ऑफ एडोलसेंस एंड स्कूल स्टडीज*, 7(1), 55-69।